हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 07 27/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

बहुत अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 148 टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) यहु तन जालौं मसि करुं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश भक्तिकाल की संतकाव्य-धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि 'कबीरदास' द्वारा रचित है। पंक्ति में कबीर दास अपने ईश को पाने के लिए सारी सीमाएँ पार करने को तत्पर दिखते हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि देह को जलाकर मैं राख बनाना चाहता हूँ। शरीर के जलने से जो धुँआ उठेगा वह स्वर्ग तक जाएगा जिससे मेरे प्रभु को आभास हो जाएगा कि उनका भक्त विरह कितना विरह-दग्ध है। तब श्री राम दया करके वर्षा करवाएँगे और दर्शन रूपी वर्षा से विरह रूपी अग्नि शांत होगी।

विशेष: 1. कबीर विरह और प्रेम में किसी भी सीमा तक जाने को तत्पर रहते हैं। यह आत्मविश्वास उनकी नाथपंथी पृष्ठभूमि का प्रभाव है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. 'अग्नि' की 'विरह' से तुलना करके 'रूपक' की व्यंजना की गई है।

3. कबीर की भाषा पँचमेली खिचड़ी है इसमें खड़ी बोली, ब्रज, अवधी सभी के कुछ तत्व अनायास मिल जाते हैं।

4.

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा संकलित तथा शृंगार के महान भक्त कवि 'सूरदास' द्वारा रचित भ्रमरगीत सार से उद्धृत हैं। पंक्तियों में सूर की गोपियाँ कृष्ण के प्रति प्रेम का प्रदर्शन वक्रोक्तिपूर्वक करते हुए निर्गुण को अस्वीकार कर रही हैं।

व्याख्या: गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव इस हृदय में कृष्ण निवास करते हैं और वे हृदय में इस प्रकार तिरछे विराजे हैं कि किसी भी प्रकार उन्हें निकालना संभव नहीं है। कृष्ण भले ही मथुरा जाकर यदुवंशी क्षत्रिय हो गए हों पर हमारे लिए तो वे वही 'अहीर' कुल के यशोदापुत्र हैं। न तो हम वसुदेव को जानती हैं न देवकी को। हमें कृष्ण का मुख देखे और कुछ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समझ में नहीं आता

विशेष :

1. भावप्रधान वक्रोक्तिविधान का प्रयोग सूर की गोपियों में अन्यतम है जो यहाँ भी प्रदर्शित है।

2. वाग्विदग्धता शैली का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण

3. सूर ~~की गोपियाँ~~ गोपियों के माध्यम से सूर 'सगुण भक्ति' की स्थापना करते हुए निर्गुण को नकार रहे हैं।

4. सूर की भाषा अलंकारों विशेषत: उपमा और रूपक के लिए जानी जाती है। ऐसा ही प्रयास यहाँ दिखता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम की पीर के कवि 'मलिक मुहम्मद जायसी' के प्रसिद्ध के ग्रन्थ 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खण्ड' से उद्धृत है। पंक्तियों में नागमती वर्षा ऋतु के समय में अपनी विरह दशा का वर्णन कर रही है।

व्याख्या: नागमती कहती है कि मेढक, मोर, कोयल तथा पपीहा सभी सक्रिय हो गए हैं। पुष्य नक्षत्र का समय भी आ गया है परन्तु ऐसे समय में मेरे पति के न होने से मेरे हृदय रूपी मन्दिर में प्रेम की छानी बाँधने के लिए कोई नहीं है। जिनके घर उनके पति उपस्थित हैं वे गर्वमय भी हैं और सुखी भी हैं; मेरे तो पति कब से बाहर हैं और इसलिए मैं सारे सुख भूल गई हूँ।

विशेष: 1. जायसी का काव्य लोकधुन युक्त काव्यरूढ़ियों के प्रयोग के लिए जाना जाता है। यहाँ भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'बारहमासा' काव्यरूढ़ि का प्रयोग किया गया है

2. ('हौं बिनु नाह मंदिर को छावा' में रूपक अलंकार का सुन्दर प्रयोग

3. जायसी की भाषा ठेठ अवधी है इसलिए उन्हे अवधी का अरघान कहा जाता है।

4. नागमती का वियोगवर्णन आलोचकों द्वारा 'हिन्दी-साहित्य की अमूल्य वस्तु' कहा गया है।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौंधि सी डीठि।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यांश श्रृंगार रस के महाकवि बिहारीलाल के काव्य संकलन 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है। यहाँ बिहारी लाल नायिका की मुस्कुराहट व सौन्दर्य से उत्पन्न होने वाली चमक का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या: बिहारी कहते हैं कि नायिका के थोड़े से हँसने से तथा मुख में उस प्रभाव के फैलने से अद्भुत चमत्कार उत्पन्न होता है। इसी मुस्कुराहट व रूप सौन्दर्य से जिसके दमकपरे प्रकाश की उत्पत्ति होती है उसे आँखें चौंधियाने लगती हैं।

विशेष:

1. 'चौंका - चमकनि - चौंध' में अनुप्रास की अप्रतिम छटा दर्शित है।
2. संयोग श्रृंगार बिहारी के काव्य में चरमोत्कर्ष तक पहुँचता है।
3. बृज-भाषा का परिनिष्ठित रूप बिहारी के काव्य में देखने को मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. 'चौंधा सी दीठि' में उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश प्रगतिवादी चेतना के आधुनिक दौर के 'जनकवि' नागार्जुन की कविता हरिजन-गाथा से लिया गया है। कवि यहाँ शिशु के जन्म के माध्यम से नव क्रान्ति चेतना के जन्म की कल्पना कर रहा है

व्याख्या: बाबा गरीबदास कहते हैं कि यह नवजात शिशु क्रांति का प्रणेता बनने पैदा हुआ है। इसे यहाँ से भगाओ क्योंकि ये बालक भारी उत्पात मचायेगा तथा इसके साथी-मित्र सब मिलकर इस पृथ्वी से शोषण का अंत करेंगे। यह सभी शोषित वर्ग का नेता बनेगा तथा नाम कमाएगा। बड़े-बड़े नेता भी इससे मिलने आएँगे।

विशेष: 1. कृष्ण-जन्म के मिथक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के माध्यम से क्रांतिचेतना के उदय की कल्पना की गई है।

2. नागार्जुन की भाषा सुलभ, सर्वजन-ग्राह्य हिन्दी है यहाँ शिल्प के चमत्कारों का मोह नहीं दिखता।

3. 'लीडर' जैसे अंग्रेजी और 'संघाती' जैसे लोक प्रचलित शब्दों का प्रयोग कथ्य की आवश्यकतानुरूप किया गया है

4. प्रगतिवादी चेतना (मार्क्सवाद) की उपस्थिति लगातार बनी हुई है।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रासदी की अवधारणा पश्चिम की अरस्तवी नाट्य शैली की देन है जहाँ यह माना जाता है कि रचना का प्रमुख उद्देश्य दर्शक के मन की बुरी भावनाओं जैसे क्रोध, हिंसा आदि का विरेचन कराना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक नैतिक, औचित्य-पूर्ण, ~~स~~ त्यागशील नायक द्वारा अनैतिकता के समक्ष संघर्ष किया जाता है। नैतिक - अनैतिक के इस द्वंद्व में नायक समर्थ होते हुए भी अतिनैतिक होने के कारण भूल (हैमर्शिया) कर बैठता है और नियति को प्राप्त होता है।

त्रासदी की अवधारणा ~~कि~~ ~~चर्चा से पर~~ के पद्मावत पर प्रभाव के अध्ययन से पहले यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि न तो जायसी त्रासदी की अवधारणा से परिचित थे और न ही इन्होंने ऐसे प्रभाव का सृजन करने का कोई सजग प्रयास किया है फिर भी आलोचकों द्वारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत में सहज रूप से त्रासदी के तत्व खोजे गये हैं।

त्रासदी के नायक की विशेषताओं पर गौर करें तो वह एक औदात्यपूर्ण, त्यागशील, साहसपूर्ण, सद्गुणयुक्त होता है जो उच्च कुल से संबंध रखता है। पद्मावत का नायक उच्च कुल का राजा तो है परन्तु उसमें अपेक्षित साहस की कमी है और वह औदात्य सम्पन्न न होकर बार-बार मूर्छित हो जाता है। इस प्रकार रत्नसेन नायक की परिभाषा में उचित नहीं ठहरता।

नायक का संघर्ष भी व्यक्तिगत प्रेम की प्राप्ति के लिए है न कि किसी सार्वजनिक हित के लिए हालांकि रचना के दूसरे खण्ड में नायक के संघर्ष को नैतिकता का संघर्ष कहा जा सकता है।

त्रासदी की संरचना दुखान्तयुक्त होती है इस दृष्टि से देखें तो उद्देश्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चाहे व्यक्तिगत हों, रत्नसेन अपनी पत्नी व देश की रक्षा व सम्मान के लिए हर प्रकार के संघर्ष को तत्पर रहता है और अन्त में इसी संघर्ष में अपने प्राण गँवा देता है। पद्मिनी और नागमती का भी चिता में कूद जाना त्रासद अन्त कहा जा सकता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पद्मावत अपनी संरचना में कुछ हद तक त्रासदी के तत्वों को धारण जरूर करती है, परन्तु इसकी मूल प्रकृति को त्रासदी कहना 'अतिशयोक्ति' ही होगी।

जायसी का उद्देश्य गौणतः लोककथा के माध्यम से 'तसव्वुफ' का संप्रेषण व मूलतः प्रस्तुत अर्थ की (रत्नसेन - नागमती के प्रेम प्रसंग) रचना करना ही था न कि त्रासदी की रचना।

अच्छा

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'बिम्ब की अवधारणा' पश्चिमी आलोचना के प्रभाव से आई है जिसका अर्थ है रचना का प्रभाव इस प्रकार हो कि वह पाठक की बुद्धि तक ही सीमित न रहकर ऐन्द्रिक अनुभूति का विषय बन जाए।

यूँ तो बिहारी बिंब की अवधारणा से परिचित न रहे होंगे, परन्तु दरबारी माहौल में काव्य रसिकों को आनन्द प्रदान करने के उद्देश्य से रचित अनुभाव योजना की प्रधानता के कारण सहज ही बिंबों का निर्माण हो जाता है और बिहारी की श्रेष्ठता का एक आधार उनके बिम्ब भी हैं।

बिहारी ने समाहार क्षमता का परिचय देते हुए एक-एक दोहे को ऐसा कसा है कि सम्पूर्ण अनुभव एक चलचित्र देख लेने जैसा होता है यथा-
"बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सौंह करै, भौंहनु हँसे, देन कहे नट जाय

इसी प्रकार क्रियाओं की सामासिकताएँ नायक - नायिका की ~~क्रियाएं~~ प्रेम क्रीड़ा के अद्भुत चित्र बिहारी ने खींचे हैं

" कहत, नटत, रीझत, खीझत, ~~मिलत~~ मिलत, खिलत, लजियात,
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सों बात"

बिहारी की बिम्ब क्षमता सिर्फ मूर्त विचारों तक ही सीमित नहीं रहती वे अमूर्त- से अमूर्त विचारों को भी पाठक के ऐन्द्रिय भोग का विषय बनाकर 'उपलक्षित' बिम्ब की सर्जना करते हैं

यथा। -
"तंत्रीनाद, कवित्त रस, सरस राग, रति-रंग
अनबूड़े, बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग"

इसी प्रकार उन्होंने अपने बिम्ब निर्माण को राजकीय जीवन व शृंगार पक्ष तक सीमित नहीं रखा उसे ~~उसे~~ वैविध्य प्रदान करते हुए एकतरफ समाज में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपस्थित कुप्रथाओं के बिम्ब खींचे तो दूसरी तरफ परिवार में महिला की स्थिति को रेखांकित किया।

कहना न होगा कि बिम्ब निर्माण क्षमता में आधुनिक काल के कवियों में 'निराला' और भक्तिकाल में 'सूर' ही बिहारी का मुकाबला कर सकते हैं, अन्य कोई नहीं।

बहुत अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

पद्मावत में नागमती का विरह वर्णन आलोचकों का प्रिय विषय रहा है जहाँ एक तरफ शुक्ल जी ने इसे "आशिक माशूकों के निर्लज्ज प्रलाप" से इतर "हिन्दू गृहिणी की पवित्र विरहवाणी" बताते हुए "हिन्दी साहित्य की अमूल्य वस्तु" कहा है तो वहीं प्रगतिवादी आलोचकों ने इसे "मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण" बताया है। जो भी हो ~~मध्य~~ पद्मावत की रचना करते समय जायसी का मन सर्वाधिक नागमती के विरह वर्णन में ही लगा है और इसलिए जायसी की प्रेम की पीर यहाँ सर्वोत्कृष्ट रूप से दर्शित होती है।

जायसी के विरह वर्णन में निम्नलिखित विशिष्टताएँ द्रष्टव्य हैं।

1. प्रेम की मूल्य के रूप में स्थापना :
~~म~~ पद्मावत में ~~प्रेम को~~ लौकिक प्रेम को सिर्फ इश्क-हकीकी का माध्यम बनाकर नहीं छोड़ा गया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बल्कि मानवता के लिए आवश्यक मूल्य के रूप में इसकी स्थापना की गई है
यथा - "मानस प्रेम भएउ बैकुण्ठी
नाहिं तै काह, धार इक मूंठी"

2. अर्जित प्रेम को महत्व : जिस प्रकार कबीर प्रेम में 'घर जारने' की हिम्मत दिखाते हैं उसी प्रकार जायसी भी सहज सुलभ प्रेम की अपेक्षा अर्जित प्रेम को महत्व देते हैं
"प्रेम पहार कठिन बिधि गढ़ा
सौं पै चढ़े, सीस सौं चढ़ा"

3. जायसी के पद्मावत में प्रेम ही जीवन का उद्देश्य माना गया है यहाँ नायक बीच समुद्र में भी सिर्फ प्रेम-प्राप्ति के लिए चिंतित है।

4. प्रेम ही जीवन की ऊर्जा है :

1. विरह का साधारणीकरण : नागमती का विरह रानी का विरह नहीं, नारी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का विरह है यहाँ इसलिए नागमती के विरह वर्णन में महलों के नहीं सहज जीवन के बिम्ब खींचे गए है।

2. नागमती का विरह इतना अधिक है कि प्रकृति भी विरह वेदना में उसका साथ देने हेतु सक्रिय रूप से उद्यत है

यथा: फिरि-फिरि रोव कोउ नहिं डोला
आधी रात विहंगम बोला
तू फिरि-फिरि दाहै सब पाँखी
केहि दुख रैनि न लावसि आँखी

3. नागमती विरह में अपने प्राण तक देने को तैयार है और इतनी विरह दग्ध होने के बावजूद उसका विरह संकीर्ण भोगलिप्सा के लिए नहीं बल्कि आदर्श रूप धारण किये हुए है।

"मोह भोग सौं काज न भारी
सौंहे दिहिट के चाहन हारी"

इस प्रकार नागमती का विरह वर्णन अभूतपूर्व बन पड़ा है।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यखण्ड हिन्दी उपन्यास के पुरोधा 'प्रेमचन्द' की सर्वोत्कृष्ट कृति गोदान से उद्धृत है। मालती यहाँ मि. मेहता के समक्ष अपनी प्रेमदृष्टि का संप्रेषण कर रही हैं।

व्याख्या: मि-मेहता द्वारा लगातार परीक्षा लिए जाने से निराश मालती अपनी प्रेमदृष्टि बताते हुए कहती हैं ~~कि~~ कि प्रेम में संदेह का कोई स्थान नहीं कोई संदेह हिंसा को जन्म देता है। प्रेम देह- से देह के मिलन से अधिक आत्मा से आत्मा के मिलन का नाम है जहाँ सम्पूर्ण आत्मसमर्पण अपेक्षित होता है, प्रेम की प्राप्ति परीक्षा से नहीं, विश्वास रूपी उपासना से होती है।

विशेष: 1. मालती के माध्यम से प्रेमचन्द ने 'छायावादी प्रेमदृष्टि' का संप्रेषण किया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. प्रेमचंद वर्गानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। चूँकि मि. मेहता व मालती उच्च वर्ग के शहरी पात्र हैं इसलिए यहाँ तत्समीकृत परिष्कृत हिन्दी का प्रयोग किया गया है।

3. सूत्र शैली का प्रयोग - 'प्रेम देह की नहीं, आत्मा की वस्तु है'।

अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी नाटक व रंगमंच के प्रसिद्ध स्तम्भ 'मोहन राकेश' की रचना 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है। यहाँ कालिदास कश्मीर से लौटने पर अपनी स्थिति का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या : कालिदास कहता है कि ~~मल्लि~~ मल्लिका तुम मुझे नहीं पहचानोगी क्योंकि मैं वह कालिदास हूँ ही नहीं जो यहाँ था। मैंने व्यक्तित्व असंगत क्षेत्र में प्रवेश कर अपने व्यक्तित्व व अंतात्मा से समझौता किया व खुद को ही भूल गया। जो कार्य मेरे लिए था ही नहीं मैंने वहाँ जाकर अपने व्यक्तित्व को ~~बेबस~~ बेबस कर दिया।

विशेष : 1. अस्तित्ववादी प्रभाव 'आत्म-निर्वासन' की झलक दिख रही है

2. मोहन राकेश की रचना-कला की सर्वोत्कृष्टता ही है कि प्रस्तुत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एकालाप भी दर्शक व पाठक को बाँधे रखता है।

3. भाषा सहज, सुबोध व सर्वजन ग्राह्य है।

4.

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यांश आधुनिक लेखन के दौर की सशक्त हस्ताक्षर 'मन्नू भंडारी' की कहानी 'यही सच है' से ~~प्र~~ ली गई है। पंक्तियों में ~~स्त्री~~ नायिका के द्वंद्व की ~~व्याख्या की~~ व्यंजना की गई है।

व्याख्या: निशीथ का ठण्डा जवाब पाकर जब दीपा संजय का आलिंगन करती है तो उसे संजय के प्यार का पूर्ण अहसास होता है। उसके मुँह से शब्द नहीं निकलते। संजय पर उसकी बाँहों की जकड़ कसती जाती है तथा उसे रजनीगंधा की महक में बसा प्यार पूर्णतः महसूस होता है। ~~उसके~~ उसे सारे द्वंद्वों से मुक्ति मिलती है तथा अहसास होता है कि निशीथ के लिए उसकी भावनाएँ मिथ्या थीं। संजय ही उसके जीवन का सच है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग अन्यतम है।

2. डायरी शैली के प्रयोग के कारण दीपा की प्रत्येक भावना, प्रत्येक अहसास खुलकर व्यक्त हो पाया है।

3. तत्समीकृत भाषा – 'भाल पर अधरों का स्पर्श'

4. 'प्रेम के द्वंद्व' का सहज चित्रण

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश मार्क्सवादी आलोचना के स्तम्भ 'डा॰ रामविलास शर्मा' के निबन्ध 'तुलसी साहित्य के सामन्तविरोधी मूल्य' से लिया गया है। शर्मा जी यहाँ तुलसी द्वारा निषादों को काव्य में स्थान दिये जाने का महत्व बता रहे हैं।

व्याख्या: डा॰ शर्मा तुलसी विरोधी आलोचकों को याद दिलाते हैं कि जिन्हे तुलसी साहित्य सामंतवादी व रूढ़िवादी लगता है, उन्हें यह याद करना चाहिए कि जिन कोल, निषाद, भील जाति के लोगों को तुलसी ने भरत-सम भ्राता कहकर काव्य में स्थान दिया है उनका मुगल काल में शिकार होता था तथा व्यापार किया जाता था। ब्रिटिश काल में भी उनकी स्थिति ऐसी ही दयनीय थी। तुलसी ने अपने समय - उनुरूप प्रगतिशीलता का

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण पेश करते हुए इन्हे राम का सरवा बताकर उच्च स्थान दिया है।

विशेष: 1. आक्रोशपूर्ण भाषा का प्रयोग

2. आलोचना की दृष्टि से तुलसी का महत्व स्थापित करने के लिए इतिहास के उद्धरण लिए गए हैं।

3. ~~स्पष्ट~~ सहज एवं बोधगम्य भाषा प्रयुक्त हुई है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश भारतेन्दु काल के वरिष्ठ रचनाकार बालकृष्ण भट्ट के निबन्ध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' से उद्धृत है। यहाँ भट्टजी व्यंग्यपूर्ण सहज लहजे में हिन्दू धर्म के विखण्डन के प्रभाव बता रहे हैं।

व्याख्या : भट्ट जी कहते हैं कि जबसे पुराणों आदि का आगमन हुआ तब से वैदिक मूल्यों से विचलन आरंभ हो गया और हिन्दू धर्म विभिन्न मतों में विभाजित होने लगा। किसी मत पर तंत्र का प्रभाव पड़ा, किसी पर वैष्णव का। इसी प्रकार जैन और बौद्ध जैसे नए-नए मत प्रवर्तित होते रहे।

विशेष : 1. व्यंग्यपूर्ण, हास्य शैली का प्रयोग

2. लोकोक्ति 'एक नारि जब दोसे फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी' का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सुन्दर प्रयोग किया गया है।

3. वैदिक काल के प्रति लेखक मोहग्रस्त नजर आते हैं।

4. भाषा भारतेन्दुयुगीन खड़ी बोली के समस्त लक्षणों को धारण करती है
यथा - व्यंग्यशैली, सहज, सुबोध लोक भाषा का प्रयोग आदि।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान प्रेमचन्द द्वारा उनकी रचना यात्रा के उत्कृष्टतम काल में रचित उपन्यास है और उनकी रचना का उत्कर्ष माना जाता है।

नामकरण की दृष्टि से देखें तो विभिन्न रचनाकार विभिन्न प्रकार के नामकरण ~~यथ~~' यथा चरित्र-प्रधान (दिव्या), ~~स्थि~~ स्थिति प्रधान (आषाढ़ का एक दिन) अँचल व भूगोल प्रधान (मैला आँचल)' की सृष्टि करते हैं जिसका प्रमुख उद्देश्य यही होता है कि वह रचना के प्रतिपाद्य को पाठक के मन-मस्तिष्क तक सफलता से पहुँचा दे तथा रचना के संश्लिष्ट प्रभाव का माध्यम बने। प्रेमचन्द द्वारा चयनित 'गोदान' भी इसी उद्देश्य को धारण करता है।

'गोदान' का शाब्दिक अर्थ गाय का दान है' जो ~~प्र~~ परंपरावादी हिन्दू संस्कृति में यजमान द्वारा शुभ-अशुभ अवसरों पर ब्राह्मण को किया जाता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।

रचना के कथानक पर दृष्टि डालें तो 'गाय' रचना में सर्वत्र उपस्थित है। प्रेमचन्द स्पष्ट करते हैं कि "गाय ही होरी के जीवन का सबसे बड़ा स्वप्न था, सबसे बड़ी साध थी"। ~~आख़~~ सामंती व्यवस्था में जहाँ किसान को इसी गाय की प्राप्ति के स्वप्न में जीवन खर्च करना पड़ता है तब भी स्वप्न मीलों दूर नज़र आता है।

कथानक ~~के~~ में होरी की दुर्दशा की शुरुआत का कारण भी गाय ही बनती है, वह भोला महतो से गाय लेता है, झुनिया से गोबर की मुलाकात होती है, हीरा गाय को ज़हर देता है और इसी क्रम में होरी 'बिरादरी' और 'मरजाद' के चंगुल में फँसता चला जाता है।

परन्तु नामकरण का उद्देश्य गाय की ~~इस~~ महत्ता को स्थापित करना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नहीं है। उद्देश्य स्पष्ट होता है रचना के अंत में जब होरी मौत का इंतजार कर रहा होता है और पंडित जी 'गोदान' की बात कहते हैं।

जिस गाय की प्राप्ति के लिए होरी (भारतीय किसान) आजीवन संघर्षरत रहा उसी को 'गोदान' के रूप में मांगा जाता है। यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमचन्द 'गोदान' के माध्यम से उस समस्त परंपरा जिसमें 'मरजाद', 'बिरादरी' और 'किसानी' शामिल हैं के कुचक्र को प्रस्तुत करना चाहते हैं।

किसान की दुर्दशा का कारण 'सामंतवाद', व साहूकार, व जमींदार जितने नहीं हैं उतना परंपरा से मोह है, अंधविश्वासों की जकड़न है।

इस प्रकार 'गोदान' एक संश्लिष्ट नाम है जिसने समस्त प्रतिपाद्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को दर्शक के सामने खोलकर रख दिया।

बहुत अच्छा

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द की कहानियों में 'ईदगाह' ~~की प्रसिद्धि~~ श्रेष्ठतम रचनाओं में से है।

~~देर~~ प्रथम दृष्टि में सरल ~~कर्म~~ कथ्य व साधारण शिल्प को धारण करने वाली कहानी अपने अंदर से ऐसे मार्मिक भावों को उजागर करती है जो गरीबी व कोताही के नन्हे बाल हृदय पर प्रभाव, भ्रष्टाचार, भारतीय सामासिक संस्कृति व पारिवारिक मेल-जोल को एक साथ व्यक्त करने में सफल होती है।

कहानी ईदगाह की तैयारियों के वर्णन से शुरू होते हुए बताती चली है कि किस प्रकार भारतीय समाज में पड़ोस को विस्तृत परिवार ही समझा जाता है। ईदगाह की ~~हृदय~~ तैयारियों में प्रेमचन्द बच्चों के उत्साह व भारतीय संस्कृति में त्योहारों के महत्व को भी बताते चलते हैं।

कहानी का मूल भाव शुरू होता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ईदगाह में नमाज व उसके बाद। जहाँ एक तरफ ईदगाह में अमीर-गरीब, सब बराबर नजर आते हैं, परन्तु नमाज से छूटते ही मेले में हामिद जैसे गरीब बच्चों को बाल-हृदय के प्रतिकूल समय से पहले बड़ा होना पड़ता है। यहाँ न तो सब बराबर हैं और न ही सामाजिक रूप से एक।

कहानी की श्रेष्ठता का दूसरा चरण हामिद द्वारा चिमटा खरीदने में निहित बड़प्पन के भाव व खिलौनों की श्रेष्ठता साबित करने की बहस में व्यंजित राजनीति व प्रशासन के विद्रूप स्वरूप व बाल-मनोविज्ञान के चित्रण में नजर आता है।

सामासिक संस्कृति को व्यंजित करते हुए प्रेमचन्द जितनी सहजता से मुस्लिम घर में प्रवेश करते हैं, वह भी अपने आप में उत्कृष्ट है।
परन्तु प्रेमचन्द की रचना कला का सर्वोत्कर्ष वहाँ दिखता है जहाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे लिखते हैं
" बच्चे हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था। बुढ़िया अमीना, बालिका अमीना बन गई थी।"

इस वाक्य में प्रेमचन्द गरीबी के बालहृदय पर पड़े प्रभावों को पाठक तक पूर्णतः पहुँचाने में सक्षम होते हैं।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन्नू भंडारी आधुनिक दौर की सशक्त महिला लेखक मानी जाती हैं। उनकी प्रसिद्धि उनके रचना वैविध्य को लेकर तो है ही, शिल्प की सजगता भी उनके यहाँ अन्यतम है जो 'यही सच है" में भी दिखती है।

कहानी की शिल्प योजना इस प्रकार है।

1. कथानक : नवलेखन के दौर की अन्य कहानियों की भाँति यहाँ भी कथानक निश्चित (आदि, मध्य, अन्त) ढाँचे में बँधा हुआ नहीं है तथा बिखरा हुआ नजर आता है। घटनाओं की न्यूनता होने के कारण कथानक में स्थितियाँ व मनोभावों का वर्णन प्रमुख हो जाता है। लेखिका प्रत्येक स्थिति, प्रत्येक भाव, प्रत्येक द्वंद्व की हर परत पाठक के सामने खोल देना चाहती है।

2. भाषा : कहानी की भाषा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कथ्यानुरूप है। लेखिका ने न तो किसी तत्सम शब्दों से मोह दिखाया न अंग्रेजी, फारसी से। जहाँ जो कथ्य के संप्रेषण हेतु उचित लगा, प्रयोग किया।

3. शैली : 'यही सच है' के शिल्प की प्रमुख विशेषता 'डायरी शैली का प्रयोग' है जिसके कारण नायिका के आंतरिक जीवन के वे द्वंद्व जिन्हें किसी अन्य शैली में कहना संभव न होता, उभरकर सामने आये हैं। हालांकि इस शैली के प्रयोग के कारण अन्य पात्रों के व्यक्तित्व के सभी पक्ष उद्घाटित नहीं हो पाए हैं।

4. चरित्र योजना : चरित्र-न्यूनता नई कहानी की विशेषता है और ऐसी ही स्थिति 'यही सच है' में भी दिखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

यह शिल्प की सफलता का ही प्रभाव है कि "यही सच है" कहानी "फिल्मी रूप" में भी अत्यन्त सफल रही है।

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

8. (क) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि गोदान महाकाव्यात्मक उपन्यास है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 20

~~म~~ महाकाव्यात्मक उपन्यास की धारणा की शुरुआत पश्चिम के उपन्यास 'टॉम जन्स' से मानी जाती है। ~~मॉडल~~ भारतीय आलोचकों ने भी उपन्यास को नये युग का महाकाव्य कहा है।

~~जिस~~ ~~प्र~~ महाकाव्य ~~a~~ उस रचना को कहते हैं जो अपने अन्दर समस्त तत्कालीन सामाजिक जीवन को समाहित करती हो, जिसका नायक औदात्य सम्पन्न हो, तथा रचना प्रभाव में उत्कर्ष मूलक हो।

इन कसौटियों पर यदि गोदान को रखा जाए तो कुछ बिन्दु दृष्टिगत होते हैं।

1. सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को धारण करने के प्रयास के कारण ही प्रेमचन्द ने खेमरी और बेलारी के जिलों का नाम बताना उचित नहीं समझा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वे सेमरी और बेलारी के माध्यम से भारत के प्रत्येक गाँव की स्थिति का चित्रण करते हैं। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक सभी पक्ष गोदान में पूर्ण विस्तार के साथ आते हैं। हालांकि कुछ आलोचकों ने तत्कालीन स्वाधीनता संघर्ष की अनुपस्थिति की शहरी कथानक की ढिलाई ~~है~~ की ओर ध्यान आकर्षित किया है तथा इसे महाकाव्यत्व की दृष्टि से बाधा माना है।

2. होरी का नायकत्व यूँ तो औपचारिकता की परिभाषा का अतिक्रमण करता है क्योंकि वह न तो उच्च वर्ग का है और न ही सुगठित, सुडौल शरीर का स्वामी। उसका रंग साँवला, मुँह पिचका हुआ है। परन्तु नैतिक रूप से होरी दृढ़ता की हर कसौटी पर खरा उतरता है। 'दमड़ी बसोर' वाले एकाध प्रसंग को छोड़ दें तो

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होरी का संघर्ष और नैतिकता उच्च कोटि की है।

3. अपने प्रभाव में गोदान उत्कर्षमूलक है। उपन्यास पढ़ने के बाद पाठक ठीक वही नहीं रहता जो वह पहले था। उसकी चेतना का विस्तार होता है तथा 'भरजाद', गरीबी, तथा ~~कि~~ जमींदारी आदि व्यवस्थाओं के प्रति आक्रोश पैदा होता है।

स्वाधीनता संग्राम का स्थूल चित्रण भले ही प्रेमचन्द ने न किया हो परन्तु उभरते लोकतन्त्र का विद्रूप स्वरूप, पत्रकारिता व उच्च वर्ग के लालच, मुनाफे व मेहनत की दुनिया का कंझाहट, तथा ~~क्रांति व~~ दलित, किसान व मजदूर आंदोलनों की उपस्थिति गोदान में पूरी तरह मौजूद है।

अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि गोदान एक महाकाव्या-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक उपन्यास है।

अच्छा

11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'पूस की रात' कहानी की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

'पूस की रात' कहानी प्रेमचन्द की रचना यात्रा का वह चरण है जहाँ वे आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का चोला उतारकर चरम यथार्थवाद में प्रवेश कर रहे थे और कहानी की संवेदना उनकी इसी दृष्टि की वाहक है।

कहानी में घटनाओं के नाम पर ~~कि~~ ठंड की रात में एक किसान की स्थिति भर है और कुछ नहीं। कहानी का मूल उद्देश्य तत्कालीन सामंतवादी समाज के विद्रूप रूप को संप्रेषित करना है जहाँ एक तरफ कुछ लोग ऐसे हैं जिनके पास संसाधनों की अधिकता है, तो दूसरी तरफ सूद के चंगुल में फँसा अन्नदाता किसान है जो अपने लिए एक कम्बल तक नहीं जुटा ~~पाट~~ पाता।

'पूस की रात' किसान और प्रकृति के सम्बन्धों को भी नग्न रूप में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उद्घाटित करती है। एक विशेष वर्ग के लिए प्रकृति सैलानी भाव का व सुन्दरता का माध्यम हो सकती है परन्तु एक किसान को प्रकृति को उसके हर रूप में, चाहे वह सुन्दर हो या कुरूप, झेलना पड़ता है।

पूस की रात ~~में~~ इंसान और जानवर के संबंध को भी बड़ी मार्मिकता से रेखांकित करती है और बताती है कि ~~कुत्ते~~ दुर्गन्ध, ~~ह~~ आदि उसकी मित्रता के भाव में आड़े नहीं आते तथा किसान के लिए उसके पालतू परिवार का ही हिस्सा होते हैं।

एक दृष्टि में पूस की ~~सब~~ रात उस 'मरजाद' के मोह का त्याग भी है ~~क्यों~~ जो गोदान में होरी को जकड़े हुए है। "~~हल्कू~~ हल्कू प्रसन्न है क्योंकि अब उसे जाड़े की रात में सोना न पड़ेगा"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसे किसान के मजदूर बनने के चरण के रूप में भी देखा जा सकता है।

अपनी संवेदना में प्रेम की बात उस आदर्शवाद का अन्त है जो हृदय परिवर्तन जैसे गाँधीवादी विचारों से प्रेरित था। "प्रेमचन्द की प्रकाश अभ्यस्त आँखे यहाँ अँधेरा देखने की कोशिश कर रही हैं"।

बहुत अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) गोदान के 'गोबर' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्द का रचनाकर्म मूलतः वर्गगत चरित्रों के सृजन के लिए जाना जाता है और गोबर भी अपवाद नहीं है।

गोबर उस नव-पीढ़ी को प्रदर्शितकरता है जिसे न तो 'मरजाद' से मोह है न ही 'बिरादरी' से और न ही 'धर्म' से वह इन सब कुप्रथाओं के सत्य को जान चुका है वह जानता है कि " ~~पैसा~~ वह अकेला सवा सौ कमाएगा" तो " न बिरादरी की जरूरत है न हुक्का पानी की "

वह उस पीढ़ी का प्रतिनिधि है जिसे ~~किसी~~ किसानी " के "काम में रुचि मालूम न होती थी " जिसके मुख पर ~~वि~~ तत्कालीन परंपरा से विद्रोह का भाव लगातार दिखता है और प्रेमचन्द ने इसे पीढ़ी -संघर्ष के माध्यम से व्यंजित किया है।

गोबर उस मजदूर वर्ग का भी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतीक है जो शहर के कोलाहल में आत्म-निर्वासन व अकेलापन झेलने को मजबूर है। व उभरते पूँजीवाद के अंधेरे पक्ष की व्यंजना का वाहक है।

झुनिया को छोड़कर भागने के प्रसंग में हालांकि गोबर साहसिक रूप से कमजोर नजर आता है, परन्तु कई अन्य प्रसंगों में झुनिया का समर्थन, पिता से विद्रोह आदि करके साहस का परिचय देता है।

गोबर पर हालांकि प्रेमचन्द के 'आदर्शवाद' का प्रभाव ~~बहा~~ दिखता है परन्तु मूलत: वह उभरते पूँजीवाद में मजदूर की स्थिति का वाहक है और उपन्यासों की परंपरा में एक 'अमिट चरित्र'।

बढ़िया ...

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation